आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : बारहवां | अंक : पाँचवां | सितम्बर-2014

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

महाराज सावन सिंह जी का संक्षिप्त जीवन परिचय - 5

जन्मदिन की बधाई

एक नई शुरूआत - 23

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

सेवा - 24

जो माँगे ठाकुर अपने ते सोई सोई देवे

युक्ति - 33

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सुरत - 35

(तुलसी साहब की बानी) सेनबार्न्टन- अमेरिका

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

अनमोल वचन - 47

संपादक	उप संपादक	विशेष सलाहकार	सहयोगी
प्रेम प्रकाश छाबड़ा 099 50 55 66 71 (राजस्थान) 098 71 50 19 99 (दिल्ली)	नन्दनी	गुरमेल सिंह नौरिया 099 28 92 53 04 096 67 23 33 04	सुखवीर कौर नौरिया व परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com	Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 सितम्बर 2014 -150- मूल्य - पाँच रुपये

सोहणे सतगुरु दा अज जन्म दिहाड़ा ऐ

सोहणे सतगुरु दा, अज जन्म दिहाड़ा ऐ,
जन्म दिहाड़ा ऐ, भागां नाल आया ऐ,
सतगुरु जी प्यारे दा, अज दर्शन पाया ऐ, (2)

1. अज जन्म दिहाड़े दी, बड़ी शान निराली ऐ,
मेरे सोहणे प्रीतम ते, अज वखरी लाली ऐ, (2)
चोला बदल के तूं, अजायब सदाया ऐ, सोहणे सतगुरु दा .....

2. ऐह नूरी मुखड़ा जी, अज जग विच आया ऐ,
लक्खां दुःखी गरीबां नूं, गुरां आण बचाया ऐ, (2)
पिता लाल सिंह नूं जी, अज लाल थमाया ऐ, सोहणे सतगुरु दा .....

3. तेरे चोज़ निराले ने, तेरी शान निराली ऐ,
तूं आ के प्रीतम जी, करदा रखवाली ऐ, (2)
नूर पुराना ऐ, नवां चोला पाया ऐ, सोहणे सतगुरु दा .....

4. रब जग विच आया ऐ, जावां बलिहारी मैं,
कोई पुछदा ना मैनूं, फिरां विचारी मैं, (2)
अपनी जाण मैनूं, रब आण बचाया ऐ, सोहणे सतगुरु दा .....

5. नानक बन आवे तूं, कदे दास कबीरा जी,
कदी अंगद अर्जुन तूं, कदे शाह फकीरा जी, (2)
तुलसी बण गोबिंद ने, स्वामी सदाया ऐ, सोहणे सतगुरु दा .....

6. कदी बण जयमल आवें, शिवदयाल स्वामी जी,
रब बण अजायब आवें, कृपाल अनामी जी, (2)
रब सावन बणया ऐ, अमृत बरसाया ऐ, सोहणे सतगुरु दा .....

7. अल्लाह ईश्वर दा, मैं जन्म मनौंदी आं,
तूं बक्श लवीं मैंनूं, तेरे तरले पौंदी आं, (2)
'जत्थेदार' निमाणे ने, तेरा भेद ना पाया ऐ, सोहणे सतगुरु दा .....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

महाराज सावन सिंह जी का सक्षिंप्त जीवन परिचय

हुजूर महाराज बाबा सावन सिंह जी का संक्षिप्त जीवन एक बार फिर बीत चुकी वर्षा ऋतु की मीठी याद करवाता है। इस रस भरपूर मीठी याद की उत्पत्ति जिला लुधियाना(पंजाब) के उस गांव में हुई जिसका पुरातन नाम महिमासिंह वाला है। आज यह गाँव रौनक बस्ती के रूप में बस रहा है।

काफी समय पहले सरदार महिमासिंह ने अपने नाम से यह गाँव बसाया था। सरदार जी ने यहाँ बसने वालों को अच्छी सुविधाएं दी ताकि यह गांव रौनकों का गढ़ बन जाए। सरदार जी की उदारता और मेलजोल वाले स्वभाव की वजह से अनेकों लोग इस गांव में आकर बस गए लेकिन यहाँ जो रौनक इनके पुत्र सरदार शेरसिंह के समय में हुई वह पहले नहीं थी। सरदार शेरसिंह अपने मीठे स्वभाव, नेक गुणों और अच्छे बर्ताव की वजह से अपने पिता जी से भी कई गुना ज्यादा थे। इन्होंने भी अपने जीते जी किसी को

परेशान होने का मौका नहीं दिया जिस वजह से यहाँ के वासी इन्हें केवल प्यार ही नहीं करते थे बल्कि दिल से चाहते थे।

सरदार शेरसिंह के पूर्ण गुरसिक्ख होने का गहरा असर इनके अपने पुत्र सरदार दरिया सिंह पर पड़ा क्योंकि घर में आमतौर पर गुरु चर्चा होती रहती थी। कभी-कभी कोई साधु भी आ ही जाता था जिससे सरदार शेरसिंह की ज्ञान भरी बातें होती थी। जब यह बच्चा किसी साधु के मुँह से नाम की महिमा सुनता तो सोच में डूब जाता। यह कई बार अपने पिता से नाम संबधी प्रश्न करता चाहे पिता उन प्रश्नों के उत्तर बहुत समझदारी से देते लेकिन इनको तसल्ली नहीं होती थी। यह बच्चा सदा अपने खाली दिल से गहरी सोच में डूबा रहता था। जब यह जवान अवस्था में पहुँचा और अपने अंदर के शकूकों का हल अपने पिता के जरिए होता हुआ न देखा तो यह साधु-सन्तों की खोज में रहने लगा।

यह देखकर सरदार शेर सिंह ने दरिया सिंह की शादी धनकौर नाम की सुशील कन्या से कर दी। धनकौर के गुण और नेक स्वभाव दरिया सिंह की रूचि से मेल खा गए। धनकौर ने अपने पति की रूचि इस तरफ से हटाने की बजाय उसे और पक्का कर दिया। इन दोनों के मेल ने घर को चार चाँद लगा दिए। उस समय धनकौर ने जो बड़ाई पाई शायद ही किसी कन्या ने पाई हो।

मालिक की खोज सरदार दरिया सिंह को सीधी तरफ ले आई। एक बार इन्हे भैंणी साहब जाने का अवसर प्राप्त हो गया। उस समय भैंणी साहब में नामधारियों के प्रसिद्ध गुरु बाबा रामसिंह जी रहते थे। आप बाबा राम सिंह जी के दर्शन करते ही लोटपोट हो गए। बाबा रामसिंह जी की नाम रूपी कमाई, पवित्र रहनी और सुंदर व्यवहार का आपके ऊपर ऐसा असर हुआ कि आप उनके पक्के प्रेमी हो गए।

वृद्धावस्था तक आपका निर्बल शरीर चल नहीं सकता था फिर भी आप बाबा रामसिंह जी के दर्शनों के लिए जाते रहे।

किसी को क्या पता था कि इस घर का पीढ़ी दर पीढ़ी वाहेगुरु से प्रेम बढ़ने का क्या मतलब है, बाद में इस प्रेम ने कब और किस रूप में मंजिल पर पहुँचना है? शायद यह सब कुछ उसके लिए ही हो रहा था जिसका इंतजार लाखों हृदय को था लेकिन अभी समय के इंतजार में एक पड़ाव बाकी था। उसके बाद इन्हें वह मंजिल प्राप्त होनी थी, जहाँ बैठकर इस कुल के किसी रोशन दीपक ने जहान के चारों तरफ रोशनी करनी थी। वह दिन नजदीक आ रहा था लेकिन आम दुनिया को क्या पता था?

सरदार दरिया सिंह के घर में एक काबिल पुत्र ने जन्म लिया। जो अपने अच्छे गुणों की वजह से काबुल सिंह कहलवाया। इसका विवाह जीवनी नामक एक उत्तम कुल की कन्या से हुआ जिसने भविष्य में जगत माता की पदवी प्राप्त की क्योंकि जीवनी जगत में एक नया जीवन लाई। संसार तप रहा था। जीव दुखी होकर परमात्मा के आगे प्रार्थनाएं कर रहे थे। सरदार दरिया सिंह भी इस दिन का बहुत बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। उनकी पौत्र खिलाने की चाह दिन-प्रतिदिन प्रबल होती जा रही थी।

आखिर सन् 1858 का वह दिन आ गया जिसका इंतजार बहुत देर से था। सावन के पाँच दिन बीते थे 27 जुलाई मंगलवार के दिन जगत माता जीवनी की कोख से जगत की तपिश बुझाने के लिए एक बालक ने जन्म लिया। बालक के जन्म की खबर सारे गांव में आग की लपटों की तरह फैल गई। उस समय बालक के पिता सरदार काबुल सिंह जी फौज में नौकरी कर रहे थे। सबसे पहले बालक के जन्म की खबर दरिया सिंह जी के कानों में पड़ी।

बालक के जन्म की खबर सुनकर दरिया सिंह जी गद्-गद् हो गए। जिसने भी सुना वह काम को छोड़कर बाबा दरिया सिंह जी को बधाई देने चल पड़ा। बाबा दरिया सिंह ने माया की गांठे खोल दी। अनगिनत रूपये, पैसे, अन्न और मिठाईयां बाँटी गई।

कुछ दिन इसी तरह बधाईयों में बीत गए। जब लोगों की आवाजाही कम हुई तो एक दिन बाबा दरिया सिंह ने बच्चे के बारे में पूछताछ की। तब घर में से किसी ने बाबा जी के कान में यह खबर पहुँचाई कि बच्चे का चेहरा बहुत विशाल और प्रभाव वाला है। रंग नूर की तरह गोरा, नाक तीखा है और सबसे ज्यादा हैरान करने वाली बात यह है कि उसके पैर में पदम है। बच्चे के ये चिह्न सुनकर बाबा जी चकित रह गए। उन्होंने उस समय ही कह दिया कि इस कुल को उजागर करने वाले ने जन्म ले लिया है; न जाने यह बालक चक्रवती राजा या पूर्ण सन्त होगा!

बच्चे के ये सुंदर चिह्न सुनकर बाबा दरिया सिंह की बच्चे को देखने की चाह भड़क उठी लेकिन घर के लोगों ने बच्चे की मासूमियत की वजह से दरिया सिंह को कुछ दिन दर्शनों से वंचित रखा। जब बाबा जी ने अपनी न रोकी जाने वाली तीखी चाह को घर के लोगों के आगे रखा तो बच्चा बाबे की गोदी में लाकर लिटा दिया गया।

बाबा दरिया सिंह की भूखी आंखों ने बड़ी बेसब्री से उस बच्चे को देखा। बच्चे को देखते ही वह अपने आपको भूल गए। आपकी आँखे बच्चे के विशाल समुद्र रूपी चेहरे की थाह लेने के लिए उसमें डूब गई। उस समय आपकी भावपूर्वक आँखें बच्चे की सुंदरता नहीं देख रही थी बल्कि उसके जरिए भविष्य में होने वाली घटनाओं के भेद भरे सपने ले रही थी। उसके दिल में कई ख्याल आए और सिनेमा की सुंदर तस्वीरों की तरह अपना प्रभाव डालकर आगे

निकल गए। बच्चे की आँखों में वह चमक थी जो महापुरुषों की आँखों में होती है। दरिया सिंह को विश्वास हो गया कि जगत की तपिश मिटाने के लिए शीतल चन्द्रमा ने अवतार ले लिया है।

बच्चे के एक बार के दर्शनों ने बाबा दरिया सिंह के दिल में यह पक्का फैसला करवा दिया कि आप जिंदगी भर न बच्चे से खुद बिछड़ेंगे और न ही उसे बिछड़ने देंगे। इसी तरह हुआ कि यह बच्चा अपने बाबा की सरपरस्ती में पलने लगा। बाबा जी इस बच्चे की तोतली बातें और कुमार अवस्था के खेलों को गौर से देखते रहते, बच्चे के अनोखेपन को देखकर सदा रीझते रहते।

आप जब कभी भैंणी साहब सतगुरु बाबा रामसिंह जी के दर्शनों के लिए जाते तो इस पवित्र बालक को भी साथ ले जाते। इस तरह इस पवित्र हस्ती में शुरू से ही उत्तम संस्कार भरने लगे। एक दिन घर में इनका नाम रखने का विचार हुआ। बाबा दरिया सिंह ने कहा कि इनका नाम सावन सिंह रखा जाए। जेठ आषाढ़ की तपिश को दूर करने के लिए सावन मास जन्म लेता है। सावन मास तपते हुए मैदान और वीरान जंगलो को अपने ठंडे छींटो से हरा-भरा कर देता है। मुझे उम्मीद है कि उसी तरह यह बालक अपनी सुंदरता और मीठी बातों से टूटे हुए दिलों में नई जान डालेगा।

इस बालक ने सावन के महीने में जन्म लेकर अपने नाम का महात्म पहले ही बता दिया है इसलिए इसके अलावा कोई और नाम चुनना कुदरत के खिलाफ होना है। आज से इस बालक को सावन सिंह कहकर बुलाया जाए। सबने इस बात को परवान किया। इस छोटे से घर की कुछ वोटों ने इस जीवनदाता का नाम सावन सिंह रख दिया।

कुमार अवस्था में सावन सिंह जी अपने साथियों के साथ खेलते हुए अपनी सुंदरता और प्रभावशाली चेहरे की वजह से सब साथियों से अनोखे लगते। राह जाते हुए राहियों के पैर आपके पतले शरीर और सुंदर चेहरे को देखकर रूक जाते। राही बहुत देर खड़े होकर आपको देखते रहते। जब आपको पता लगता कि ये राही मेरी तरफ देख रहे हैं तो आप शर्म से अपने साथियों के पीछे छिपने का यत्न करते।

आपने अपने साथ बीती हुई बात बताते हुए एक सतसंग में कहा कि मैं एक बार अपने नानके गांव में अपने मामा के बच्चों के साथ खेल रहा था। एक जाट पास ही आकर खड़ा हो गया और मेरी तरफ देखकर मेरे मामा के बेटों से कहने लगा, ''यह बालक आपके काम आने वाला नहीं।'' उस जाट की बात गहरी थी। वे सब हँसने लगे। मैंने दिल में ख्याल किया कि इस जाट ने यह वचन मेरे कमजोर शरीर को देखकर कहे हैं।

कुदरत की मेहर से बाबा दरिया सिंह जी कुछ समय बाद चोला छोड़ गए। अब आप अपने पिता सरदार काबुल सिंह जी की रहनुमाई में पलने लगे। उन्होंने सबसे पहले सावन सिंह जी की विद्या का प्रबंध किया। आपके अंदर लड़को वाली बुरी आदतें जैसे ताश खेलना, आवारा फिरना बिल्कुल नहीं था। आप कक्षाएं पास करते हुए मैट्रिक पास कर गए। उस समय सरदार काबुल सिंह जी सूबेदार थे। आपने आपका नाम जिलेदारी के उम्मीदवारों की लिस्ट में दर्ज करवा दिया लेकिन आपकी सेहत खराब हो गई। आपको दो साल तक गांव में रहकर सेहत को ठीक करना पड़ा।

गांव में रहते हुए आपको अपने बाबा जी की याद सताती रहती। आपकी वृति का कुदरती झुकाव गुरमुखता की तरफ था

क्योंकि पैदा होते ही आपको गुरमुख बाबा जी की संगत मिल जाने से आप शुरू से ही परमार्थ में पैर रख चुके थे। जब तक बाबा जी जीवित रहे तब तक आपका मनोरथ उनके द्वारा पूरा होता रहा लेकिन उनके बाद आप बिल्कुल डाँवाडोल अवस्था में रहने लगे।

छोटे होते हुए बाबा जी ने आपको जो शिक्षाएं दी थी वे एक-एक करके जाहिर होनी शुरू हो गई। पहली शिक्षा यह थी कि नाम किसी गुरमुख की रहनुमाई के बिना नहीं जपा जा सकता।

जब आपने अपने इस ख्याल को सामने रखकर अपने आस-पास नजर डाली तो आपकी नजर एक गुरमुख प्रेमी भाई भूपसिंह पर जा टिकी। भाई भूपसिंह आपके गांव में ही रहते थे। भाई भूपसिंह पवित्र जिंदगी जीने वाले, नाम की कमाई करने वाले पूर्ण त्यागी और वेदांत शास्त्रों के अच्छे माहिर थे। आपका आना-जाना इनके पास हो गया। रोज के आने-जाने की वजह से आप पर इनकी संगत का गहरा असर हुआ। आपने भाई जी के पास वेदान्त की कई पुस्तकें भी पढ़ ली। भाई जी का ऐसा जीवन देखकर आपमें कुदरती चाह पैदा हो गई कि मैं भी ऐसा ही जीवन व्यतीत करूंगा लेकिन माता-पिता की तरफ से आपको पूरी छूट प्राप्त नहीं थी। आपकी सेहत ठीक हो जाने पर आपके पिता ने आपको अपने पास बुला लिया तो आपको यह ख्याल बीच में ही छोड़ना पड़ा।

आपको परमार्थ का शौक था लेकिन पिता आपको किसी मुलाजिमत में फँसाना चाहते थे। इसी खींचतान में कुछ बेस्वादी भी रही। आप छबीस साल की उम्र तक बेस्वादी का जीवन बिताते रहे। पिता चाहते थे कि मेरा पुत्र फौज में इंडियन ऑफिसर हो जाए। पिता ने अपने कमांड अफसर से बात की। कमांड अफसर ने इस बात को मान लिया और साथ ही प्रण किया कि मैं धीरे-धीरे इन्हें

इस पदवी पर पहुँचा दूंगा लेकिन अभी आप कुछ समय फरुखाबाद में फौजी स्कूल मास्टर का काम करें। आपने अपने पिता की बात को मानते हुए कुछ महीने इस काम को निभाया लेकिन आपका दिल शराबी-कबाबी तिलंगे सिपाहियों में कब लगना था? जब दिल नहीं लगा तो आपने उस नौकरी से इस्तीफा दे दिया।

इस नौकरी के दौरान आपकी मुलाकात सन्त निहालसिंह नाम के साधु से हुई। जहाँ संसारिक लोग आपकी वृति को मालिक से दूर रखने का यत्न करते थे लेकिन आप सदा किसी नेक और पवित्र आत्मा की चाह रखते थे। यही कारण था कि आप जहाँ जाते वहाँ कोई गुरुमुख ढूंढ ही लेते थे। आप अपने परमार्थी ख्यालों में कमी नहीं आने देते थे। यह नौकरी छोड़कर आपने रूड़की जाकर इम्तिहान दिया और आप पास हो गए। इधर आप रूड़की से ओवरसियर बनकर निकले तो उधर कमांड ऑफिसर ने भी आपको इंडियन ऑफिसर लेना परवान कर लिया लेकिन आपने फौजी महकमे से इजींनियरिग महकमे को अच्छा समझा।

सन् 1886 में आप नशहरा छावनी जिला पेशावर में ओवरसियर की नौकरी पर जा लगे। यहाँ आकर भी आपने सबसे पहले किसी महात्मा की खोज की। नजदीक ही एक मर्दान नामी गांव में किसी महात्मा की जानकारी हुई। वहाँ आपकी मुलाकात बाबा कर्मसिंह जी से हुई। ये महात्मा अच्छी कमाई वाले थे। जितना समय आपकी नौकरी यहाँ रही आप बाबा कर्मसिंह जी की संगत करते रहे।

आपको शुरू से ही सारे मजहबों के धर्मग्रंथ पढ़ने का बहुत चाव था। आपने हर मजहब के ग्रंथ को अच्छी तरह पढ़ा जिसका फल यह हुआ कि आपकी रूहानियत की नींव दिनों-दिन पक्की होती गई। थोड़े समय बाद आपकी बदली पेशावर हो गई। पेशावर

में आपकी देखरेख में कई नई इमारतें और सड़कें बनी। यहाँ आपने कई मुश्किल सरकारी कामों को सिरे चढ़ाया।

पेशावर की सबसे ज्यादा महत्त्पूर्ण बात यह है कि यहाँ आपका मिलाप एक मशहूर फकीर बाबा काहन के साथ हुआ। यह फकीर बहुत कमाई वाला था इसलिए आपका इसके साथ गहरा प्यार हो गया। यह फकीर अपने पास आने वाले श्रद्धालुओं से बहुत कड़ा व्यवहार करता था अगर कोई पाप करके इसके पास आता तो यह भरी सभा में उसका अपमान कर देता था इसलिए आम लोग इस फकीर के पास आने से झिझकते थे। केवल वही इस फकीर के पास आते थे जिन्हें अपने आचरण पर पूरा भरोसा था।

आप बाबा काहन से मिलते रहते और बाबा काहन भी आपसे मिलकर बहुत खुश होते। जब महीने के बाद तनख्वाह मिलती तो आप अपनी तनख्वाह इस फकीर के आगे रख देते। बाबा काहन उस तनख्वाह में से एक-दो रूपये उठा लेते और उन पैसों को छोटे-छोटे बच्चों को बाँट देते। एक बार आपको ईनाम के तौर पर काफी रकम मिली। जब आप बाबा काहन के पास पहुँचे तो बाबा काहन ने आपको दूर से देखकर कहा, ''इस बार तुझे बहुत रूपये मिले हैं इसलिए मैंने गोल-गोल सफेद बहुत सारे लेने हैं।'' आपने कहा, ''बाबा! अब तू कुछ लालची हो गया है।'' काहन ने कहा, ''बच्चू! मैं लालची नहीं, मैं तेरी कमाई को सफल कर रहा हूँ।''

कई बार सतसंग में जब यह कथा चलती तो आप बताया करते थे कि उन रूपयों में से बाबा काहन ने दस-पंद्रह रूपये उठा लिए और मेरे देखते-देखते ही सारे रूपये बच्चों को बाँट दिए अपने पास एक रूपया भी नहीं रखा। साईं की इस अंतर्यामता और उदारता को देखकर आप बहुत प्रसन्न हुए। एक दिन आपने साईं

से कहा, ''बाबा! मुझे कुछ दें।'' साईं ने कहा, ''आपको मिलेगा जरूर लेकिन मिलेगा किसी और फकीर से, वह समय नजदीक आ रहा है।'' यह सुनकर आप बहुत प्रसन्न हुए।

कुछ समय बाद आपका तबादला कोहमरी हो गया। यहाँ आपने भूरामल के गुरुद्वारे के पास अपनी रिहायश कर ली। इस गुरुद्वारे में आम साधु फकीर आते ही रहते थे, जिनके साथ आपका वचन-विलास होता रहता था। आप जहाँ भी जाते अपनी गुरुमुख रूचि के अनुसार अपना मेल-मिलाप परमार्थी पुरुषों के साथ रखते और पूर्ण महात्मा की तलाश में रहते।

आखिर वह दिन नजदीक आ गया जब आपको राजसन्त की पदवी प्राप्त होनी थी। सन् 1894 में एक दिन आप सड़कों की देखभाल कर रहे थे कि वहाँ से पूर्ण सन्त बाबा जयमल सिंह जी गुजरे उस समय बीबी रूक्को भी बाबा जी के साथ थी। चलते हुए बाबा जयमल सिंह जी ने रस से भरी हुई आँखो से अपनी मीठी नजर आपकी आंखो में डाल दी, आपके रोंगटे खड़े हो गए।

आप चाहते थे कि बाबा जयमल सिंह जी के साथ कोई बात करें लेकिन काम में मग्नता और अंजान झिझक ने आपको ऐसा नहीं करने दिया। बाबा जयमल सिंह जी आगे चले गए लेकिन आपके अंदर उन्हें एक बार फिर देखने की इच्छा पैदा हुई कि मैं ऐसे तेज वाले बाबा जी का दर्शन करूं लेकिन आपने अपने आपको यह समझाकर संतुष्ट किया कि यह कोई बुजुर्ग सरदार है जो अपने किसी काम के लिए यहाँ आया होगा!

बाबा जयमल सिंह जी ने बीबी रूक्को से कहा, ''यही वह बंदा है जिसके लिए हम यहाँ आए हैं।'' बीबी रूक्को ने कहा, ''इसने तो आपको फतह भी नहीं बुलाई।'' बाबा जी ने कहा कि

इस बेचारे को क्या पता है? आज से चार दिन बाद यह अपने आप सतसंग में आ जाएगा।

बाबू काहन सिंह बाबा जयमल सिंह जी का सतसंगी था, उसका सावन सिंह जी के साथ अच्छा मेल-मिलाप था। बाबू काहन सिंह ने आपको बाबा जयमल सिंह जी के आने की जानकारी दी। आपको हर समय नए से नए महात्मा से मिलने की चाह रहती थी इसलिए आप एकदम बाबा जी से मिलने के लिए तैयार हो गए और चार दिन बाद आप सतसंग में शामिल हो गए।

जैसे ही आपने बाबा जयमल सिंह जी का सतसंग सुना आपको अपने अंदर ठंडक महसूस हुई। बाईस साल के सकंल्प एक-एक करके धुएं के बादल की तरह उड़ गए। एक दिन आपने बाबा जयमल सिंह जी से 'नाम' के लिए प्रार्थना की और साथ ही यह भी कहा कि मुझे 'राधास्वामी नाम' न दें। बाबा जयमल सिंह जी ने हँसकर कहा कि राधास्वामी कोई मजहब या मत नहीं, यह सन्तमत है। सन्तों का मत सारी दुनिया के लिए सांझा होता है। बाबा जयमल सिंह जी का उत्तर सुनकर आपने उत्तेजना प्रकट करते हुए अपनी गर्दन इस तरह नीचे की जैसे कोई गहरी सोच में विचार कर रहा हो! मन बड़ा पापी है। बाईस साल के संकल्प गंवाकर एक छोटी सी बात को पकड़कर अड़ गया। बाबा जी समझ गए कि यह फिर रेत की दीवार के नीचे आ गया है।

बाबा जयमल सिंह जी ने आपकी गर्दन ऊपर करके, आँखों में आँखे डालकर कहा, ''कभी शब्द हजारे का पाठ किया है?'' आपने हारे हुए जुआरी की तरह अपनी तरसती हुई आँखों के साथ जीभ की आवाज को मिलाकर कहा, ''हाँ जी।'' बाबा जी ने फिर कहा, ''उसमें गुरु साहब ने मालिक को कितने नामों से याद

किया है?'' जवाब में आपने कहा, ''बारह तेरह सौ नामों से मालिक को याद किया है।'' बाबा जी ने कहा, ''अगर हमने एक नाम ज्यादा रख दिया तो तू क्यों परेशान हो गया है?'' बाबा जी के ये वचन सुनकर आपका बहका हुआ मन फिर पवित्र हो गया और आपने उसी समय क्षमा मांगी।

बर्तन को पवित्र हुआ देखकर बाबा जयमल सिंह जी ने झट से आपको 'नाम' दे दिया। आपके संशय को दूर करने के लिए आपने समझाया, ''बच्चू! सन्त जब-जब संसार में आते हैं वे मालिक का नाम अपनी बोली में रखते हैं। उनके नये नाम को सुनकर पुरानी लकीरों के फकीर पास नहीं फटकते। संसार में परख करने वाली खोजी आत्माएं ही महात्मा के पास आती है। महात्मा ऐसी आत्माओं के ऊपर नाम का रंग चढ़ाकर उन आत्माओं को अपने जैसा बना लेते हैं। 'नाम' एक कसौटी है जो अधिकारी और अनअधिकारी आत्माओं की परख करती है।''

बाबा जयमल सिंह जी की ऐसी बातें सुनकर आपका चित्त गद्-गद् हो गया। आप भक्ति में लग गए। आपकी भक्ति और प्रेम को देखकर बाबा जयमल सिंह जी बहुत प्रसन्न होते। मुर्शिद के प्यार में भरपूर कई घटनाएं बहुत प्रसिद्ध हैं। बहुत सी घटनाएं प्रेमियों ने सतसंग में सुनी भी हैं।

29 दिसम्बर 1906 में बाबा जयमल सिंह जी ने संसार का भार आपके सिर पर रखकर परम धाम जाने की तैयारी कर ली। उस समय आप नौकरी पर थे आपको वहाँ खबर पहुँचाई गई। आपने ब्यास आकर बहुत सजधज के साथ संस्कार किया। बाबा जयमल सिंह जी के जीवनकाल में बहुत से प्रेमियों ने आपसे 'नामदान' प्राप्त किया। आप हर महीने ब्यास आकर सतसंग की सेवा कर

जाया करते थे लेकिन संगत की प्रेम रूपी डोरों ने आपको नौकरी करने का और समय नहीं दिया। थोड़ा समय और नौकरी करने से आपको पूरी पेंशन मिल सकती थी लेकिन संगत के प्रेम के आगे कोई पेश नहीं गई। आपने थोड़ी पेंशन में गुजारा करना मंजूर करके नौकरी छोड़ दी।

डेरा ब्यास में दिन-प्रतिदिन संगत बढ़ने लगी। संगत की जो रौनक पहले नाममात्र थी वह हजारों की गिनती में बढ़ गई। आपने लगभग 41 साल संगत की सेवा की। आपसे नाम लेने वालों की गिनती लाख से ऊपर हो गई जिसमें हिन्दुस्तान और बाहर के देशों के सतसंगी भी थे।

इस लंबी सेवा के बाद 2 अप्रैल1948 को आप संसार की बाँहे नये चोले के हाथ में पकड़ाकर चोला छोड़ गए। आपके सतसंगों में आने वाली संगत की गिनती चालीस हजार तक पहुँच जाती। लंगर का प्रबंध बहुत बढ़िया होता, सारी संगत ढ़ाई-तीन घंटो में प्रशाद खाकर खाली हो जाती। लंगर में खीर, सब्जी, अचार, चटनी, दाले बनाई जाती।

गर्मियों में संगत के सोने का प्रबंध अच्छा हो जाता लेकिन सर्दियों में संगत ज्यादा होने की वजह से संगत मकानों में समा नहीं पाती थी इसलिए तंबुओं का खास प्रबंध किया जाता फिर भी कई प्रेमियों को आसमान की रजाई के नीचे सोना पड़ता। संगत की इस तकलीफ को देखकर आपने एक बड़ा सतसंग घर तैयार करवाया जिसकी लागत बिना मजदूरी पौने चार लाख रूपये आई।

आपका उपदेश कुल आलम के लिए था, आपकी संगत में सब मजहब के लोग आते थे। आप ठंडा हौका लेकर कहा करते कि गुरु

नानक साहब ने सिक्खों को इतनी ऊँची दात दी है लेकिन इन बेचारों ने बानी को केवल अपनी विरासत समझ लिया है। जब आप सतसंग में बानी का मतलब समझाते तो कई प्रेमी हैरान होकर कहते कि हमें तो बानी की समझ ही आज आई है; यही कारण था कि दूसरे मजहबों के सतसंगी भी गुरबानी से बहुत प्यार करते थे।

मुलतान के मुसलमानों और पहाड़ी डोगरों ने अपने घरों में दरबार साहब रखे हुए थे। वे अपना कार-व्यवहार गुरुमत की मर्यादा के अनुसार ही करते थे। आप किसी मजहब की निन्दा नहीं करते थे। आप कहा करते थे कि मजहब दुनिया ने अपने आप ही बनाए हैं महात्मा कोई मजहब नहीं बनाते दुनिया इनकी शरण लेकर मालिक को भूल गई है।

एक बार किसी ने आपसे कहा कि आप राधा स्वामी मजहब क्यों बना रहे हो? आपने उत्तर में कहा कि राधास्वामी कोई मजहब नहीं अगर राधा स्वामी कोई मजहब है तो मैं पहला इंसान होऊंगा जो इस्तीफा दे दूंगा। जब यह मत मजहब का रूप धारेगा तो यह भी औरों की तरह हो जाएगा। यही कारण था कि कोई आपको राधा स्वामी, फतह या दुआ-सलाम बुलाए तो आप सबके साथ प्यार और सतकार का व्यवहार करते थे। कई बार जब आप सतसंग करके उठते तो आप राधा स्वामी या सतश्री अकाल भी कहा करते थे।

आप हर समय किसी न किसी काम में लगे रहते थे। आप अमृत वेले दो-तीन बजे के करीब बिस्तर से उठ बैठते, स्नान करके वाहेगुरु की याद में मगन हो जाते। दिन चढ़ने पर सतसंग करते। कई बार मिलने वाले प्रेमी इतने ज्यादा हो जाते कि आपको प्रशाद

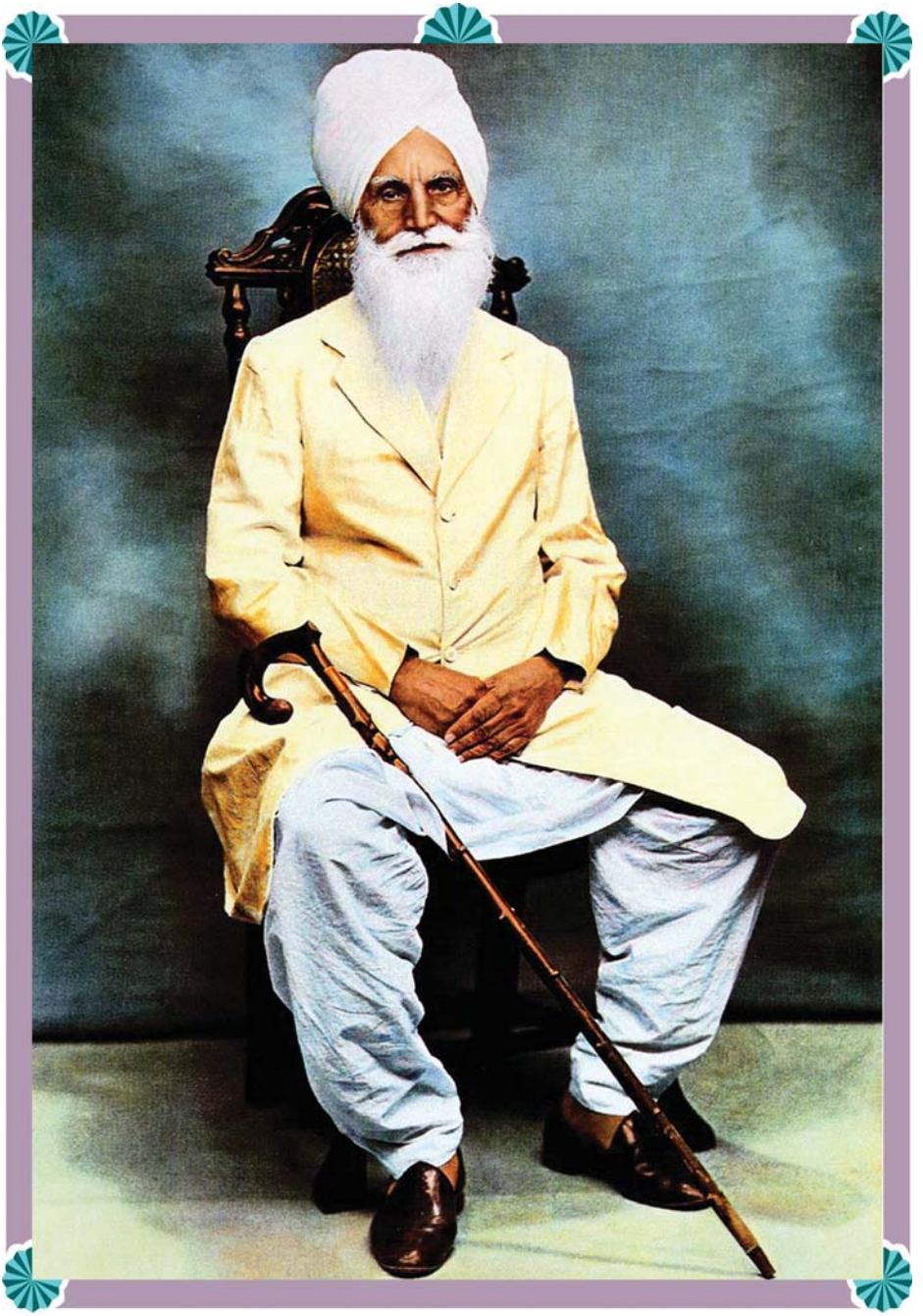

चखने का समय भी मुश्किल से मिलता लेकिन आप मिलने वालों को कभी निराश नहीं करते थे। जब काफी रात बीत जाती तो आपको बिस्तर पर आराम करने का समय नसीब होता।

आप कम सोने और कम बोलने की आदत के पूरे पाबंद थे। मालिक की बातें सुनते या सुनाते थे। जब देखो आप उपदेश कर रहे हैं, किसी को समझा रहे हैं, नाम जप रहे हैं, सतसंग कर रहे हैं। या प्रेमियों के पत्रों के जवाब दे रहे हैं। आप माथा टिकवाने के हक में नहीं थे अगर कोई खास प्रेमी अपने भजन की कमाई बताकर माथा टेकने की आज्ञा मांगता तो आप खुशी से आज्ञा दे देते। आपको माथा टेकने का मान किसी विरले प्रेमी को ही प्राप्त होता।

आप सदा हक हलाल की कमाई पर गुजारा करते रहे और प्रेमियों को भी इस पर अमल करने के लिए कहते रहे। आपने सारी उम्र मांस और शराब का सेवन नहीं किया और न ही अपने सेवकों को इसका सेवन करने की आज्ञा दी। एक बार नौकरी के दौरान घोड़ी से गिरकर आपकी टाँग टूट गई। डाक्टरों ने बहुत जोर दिया कि आप जब तक मांस की तरी नहीं पिएंगे आपकी टाँग नहीं जुड़ेगी लेकिन आपने चने की तरी पीकर ही गुजारा किया।

आपने शास्त्रों की मर्यादा के अनुसार पूरे पच्चीस साल ब्रह्मचार्य जीवन व्यतीत किया। आपका पहला विवाह पुरानी रीति के अनुसार 11 साल की आयु में हो गया था लेकिन आपका मिलाप नहीं हुआ। नौं साल बाद जब आपने मुकलावा लेने जाना था तो कुछ दिन पहले ही आपकी पत्नी का देहान्त हो गया; उस समय आपकी आयु बीस साल थी। दूसरा विवाह होने तक आप पच्चीस साल के हो चुके थे, आपने छत्तीस साल की उम्र तक गृहस्थ भोगा। इस सारे समय में आपको अपने महल में छह महीने रहने का ही समय मिला।

आपके घर में तीन पुत्रों का जन्म हुआ। आपके सबसे बड़े साहबजादे का नाम सरदार विचिन्त सिंह, बीच वाले साहबजादे का नाम बसन्त सिंह और सबसे छोटे साहबजादे का नाम सरदार हरबंस सिंह था। सरदार बसंत सिंह जी चालीस साल की उम्र बिताकर आपके हाथ में चोला छोड़ गए। आपने अठाईस साल का समय नौकरी में बिताया। आखिरी अवस्था तक आपका शरीर बहुत पुष्ट, चुस्त और फुर्तीला रहा, आप इतना तेज चलते थे कि पीछे चल रही संगत को भागना पड़ता था।

आप बिना किसी थकावट के पहाड़ की चढ़ाई पर चढ़ जाते थे। चेहरे का नाम रूपी दीदार इतना रोशन था कि नजर नहीं टिकती थी। आपकी दाढ़ी इतनी नूरी थी कि एक बार आप पेशावर गए तो वहाँ के पठानों ने कहा कि इस महात्मा के अंदर की करामात का तो हमें पता नहीं लेकिन हमने इतनी सुंदर दाढ़ी नहीं देखी।

आपके नूरानी मुख पर तिल बहुत सुंदर लगता था। आपकी चाल चकोर की तरह थी, आपके पैर में पदम था। आपका कद दरम्याना था और पेट की छोटी सी गोगड़ का उभार शरीर का श्रृंगार था। आप सन्तमयी पयजामा पहनते थे, आपको कोट पहनने की आम आदत थी। सर्दी में आमतौर पर लम्बा कोट पहन लेते थे। आप हमेशा सफेद कपड़े पहनते थे लेकिन आपके कोट का रंग काला या सुरमयी होता था। आप सदा हाथ में छड़ी रखते थे।

आप कभी भी किसी के साथ बहस या झगड़ा नहीं करते थे। आप झगड़ा करने वालों से हार मानकर अपनी जीत प्राप्त कर लेते थे। आप ज्यादा छोटे बच्चों, बूढ़ों, अंधो या बहरों को 'नाम' नहीं देते थे, उन्हें दृष्टि से ही तार देते थे।

***

एक नई शुरूआत

सईयो नीं आज शुभ दिहाड़ा आया ऐ,
भाग जिन्हां दे चंग्गे दर्शन पाया ऐ,

दूर-दू तों संगत आई खुशियां खूब मनाईयां,
दर्शन करने खातिर परियां स्वर्गां तों चल आईयां,
मंगल गाया ऐ भाग जिन्हां दे चंग्गे दर्शन पाया ऐ।

11 सितम्बर हमारे महान गुरु परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज का जन्मदिन है। आपने आज के दिन दुनिया में आकर हम पापी जीवों को 'शब्द-नाम' का दान दिया और अपने सच्चे घर पहुँचने का रास्ता दिखाया।

हर साल हम सब मिलकर आपका जन्मदिन मनाते हैं, दीपक जलाते हैं और बहुत खुश होते हैं। हममें से बहुत लोगों ने अपना 'नित-नियम' बनाया हुआ है और उस पर अमल भी कर रहे हैं लेकिन कहीं न कहीं हममें से बहुत लोग सतसंग में आने को, जन्मदिन मनाने को बस महज एक रीति-रिवाज ही मानते हैं और अपने समय का पूरा फायदा नहीं उठा पाते।

आओ! हम सब मिलकर आज बाबाजी के इस जन्मदिन से एक नई शुरूआत करें, अपना 'नित-नियम' बनाएं और अपने गुरु को उनके जन्मदिन का सच्चा तोहफा दें।

सारी संगत की तरफ से बाबाजी को जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

सेवा

मैं सबसे पहले अपने गुरुदेव परमात्मा कृपाल का धन्यवादी हूँ, जिन्होंने अपने मुबारक चरण रखकर इस धरती को पवित्र किया। उस जगह को पवित्र माना जाता है जहाँ बैठकर गुरु अपना सुंदर समय बिताता है। गुरु रामदास जी अपनी बानी में लिखते हैं:

जित्थे जाय बहे मेरा सतगुरु सोई थान सुहावा।
गुरु सिक्खी सो थान भालया जिनमें सतगुरु पावा।।

गुरु के जो शिष्य उस जगह की संभाल करते हैं, वे गुरु को प्यारे लगते हैं। जो शिष्य सेवा करते हैं अभ्यास करते हैं गुरु उनकी **सेवा** को परवान करता है, अपने खजाने में दाखिल करता है। जो शिष्य गुरु को कुलमालिक समझकर तन-मन से पूजा करते हैं गुरु का दिया हुआ काम करते हैं उनको भी पूजा जाता है; गुरु उन्हें अपने घर के अंदर जगह देता है।

यह उनकी ही दया है कि हम सब लोग यहाँ इकट्ठे हुए हैं। वह हमारे लिए भक्ति करने का एक-दूसरे के साथ मिलाप करने का जरिया बनाता है कि हमने किस तरह इकट्ठे होकर गुरु की याद मनानी है, अपने जीवन, तन-मन और धन को सफल करना है।

गुरु की **सेवा** के बारे में हमें गुरु रामदास जी के इतिहास से बड़ी अचरज शिक्षा मिलती है। सेवा गरीब को अमीर और नीच को ऊँचा करती है। गुरु रामदास एक बहुत ही गरीब परिवार में पैदा हुए थे। बचपन में आपके सिर से माता-पिता का साया उठ गया था। आप बचपन में ही ननिहाल का सहारा देखकर वहाँ गए लेकिन

वहाँ भी आपको सहारा न मिला। आपने बचपन से ही दस नाखूनों से रोजी-रोटी कमानी शुरू की। आप छोटा सा काम छाबड़ी लगाकर घुमड़ी (उबले हुए चने) बेचा करते थे।

गुरु अमरदेव जी और उनकी धर्मपत्नी घर में अपनी लड़की की शादी के बारे में बात कर रहे थे। इतनी ही देर में रामदास ने आवाज लगाई कि घुमड़ी ले लो। गुरु अमरदेव जी की पत्नी ने कहा अगर हमें कोई ऐसा लड़का मिल जाए तो अच्छा है! हिन्दुस्तान में परंपरा है कि माता-पिता ही बच्चे का रिश्ता मुकर्र करते हैं। गुरु अमरदेव जी की प्यार भरी निगाह रामदास पर पड़ी तो गुरु अमरदेव जी ने कहा कि ऐसा लड़का तो यही है।

गुरु अमरदेव जी ने रामदास से कुछ नहीं पूछा और अपनी लड़की का रिश्ता दे दिया। हिन्दुस्तान के रीति-रिवाज के मुताबिक गुरु अमरदेव जी ने कहा, ''हमारे भल्ला कुल में यह रीत है कि घर से लड़की देते हैं और साथ ही कुछ तोहफे भी देते हैं, तू मांग क्या चाहता है?'' रामदास जी ने कहा, ''आप मुझे 'नाम' का दान दें और कुछ नहीं चाहिए।''

रामदास जी ने गुरु अमरदेव जी को दुनियावी रिश्तेदार नहीं समझा, कुलमालिक समझकर दिन-रात **सेवा** के लिए कमरकसा कस लिया। वह सेवा ही थी जिससे रामदास जी को मालिक के घर में परवान किया गया। आप नीच से ऊँच हुए और आपको सारी दुनिया में पूजा गया। हम उनकी **सेवा** से प्रेरणा प्राप्त करते हैं कि उन्होंने सेवा करके ही मान प्राप्त किया था।

कबीर साहब ने एक छोटे से घराने में आकर मालिक की भक्ति की। हमें भी प्रेरणा दी कि गुरु का हुक्म मानना है और बीच

16 पी.एस.आश्रम में बाबा जी का जन्मदिन मनाते हुए प्रेमी

16 पी.एस.आश्रम में बाबा जी का जन्मदिन मनाते हुए प्रेमी

में मन को नहीं आने देना। कबीर साहब के वक्त हिन्दुस्तान में लोधी सिकन्दर बहुत शक्तिशाली बादशाह हुआ है। इसी तरह गुरु रामदास जी के वक्त भी हिन्दुस्तान में मुगल खानदान का बहुत विशाल राज्य था। आज हमें उन राजाओं के किलों के निशान तो नजर आते हैं लेकिन आज उनको कोई याद करने वाला नहीं है। इन महान पुरुषों ने अपने गुरुओं की **सेवा** की, नाम जपा, तन-मन और धन सब कुछ गुरु पर कुर्बान कर दिया। हम आज उन्हें प्यार से याद करते हैं। हिन्दुस्तान में करोड़ों आदमी आज भी कबीर साहब, गुरु रामदास जी का जन्मदिन मनाते हैं।

आप लोगों ने महाराज सावन सिंह जी की हिस्ट्री अच्छी तरह पढ़ी है। सब जानते हैं कि आपने किस तरह अपना तन-मन अपने गुरु के ऊपर कुर्बान कर दिया। सच्चे दिल से **सेवा** की और गुरु घर में मान प्राप्त किया, यह मान किसी हुकूमत से नहीं मिलता। इसी तरह महान गुरु महाराज कृपाल सिंह जी ने अपने गुरु सावन सिंह जी की **सेवा** की। अपना तन-मन और धन अपने गुरु पर कुर्बान कर दिया; आज हम उन्हें प्यार से याद करते हैं।

मुझे खुशी है कि बहुत से प्रेमी घर की जिम्मेवारियां छोड़कर कई महीनों से यहाँ तन, मन, धन से सेवा कर रहे हैं। महाराज जी आपकी **सेवा** की बहुत कद्र करते हैं। आपने जो समय यहाँ बिताया है वह उनके खजाने में दाखिल है, उनके रजिस्टर में दर्ज है। महाराज जी कहा करते थे, ''सेवक मेरे दिल पर लिखे हैं।''

मैं आपको प्यार से बताना चाहता हूँ कि **सेवा** कर लेनी आसान है। हम एक-दूसरे को देखकर सेवा कर लेते हैं और एक-दूसरे को देखकर उत्साह भी आ जाता है लेकिन सेवा को संभालकर रखना इससे भी ज्यादा मुश्किल होता है।

प्यारेयो! हमें **सेवा** करके मान नहीं करना चाहिए अपने आपको बीच में नहीं आने देना चाहिए। सतसंगी को यह मानकर चलना चाहिए कि हमने तन, मन, धन की सेवा में और सिमरन में जो समय लगाया यह महान गुरु की ही दया है, इसे गुरु ने ही करवाया है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मत थोड़ी सेव गँवाईऐ।

हमारा जानी दुश्मन मन हमारे अंदर है, यह कोई वक्त हाथ से नहीं जाने देता। **सेवा** करके अपने अंदर अहंकार की दीवार खड़ी कर लेता है कि अगर मैं यह सेवा न करता तो किस तरह सतसंग का कार्यक्रम चलता?

यह मेरे आश्रम का वाक्या है कि मैंने जातिय तौर पर किसी आदमी को महाराज कृपाल से बात करते हुए सुना। वह आदमी महाराज जी की तारीफ कर रहा था कि किसी वक्त आपने उसकी मदद की थी लेकिन महाराज कृपाल ने उससे कहा, ''आज तो आपने बात कर ली है आगे से ऐसी बात नहीं करनी, इसमें मेरा कोई अहसान नहीं था। मैं अपने गुरु का धन्यवादी हूँ जिसने मेरे अंदर बैठकर मुझे प्रेरणा दी, मुझसे काम करवा लिया।''

कल दुनियावी तौर पर और अंदरूनी तौर पर गुरु को काम करते हुए देखकर मुझे खुशी हुई। जिन प्रेमियों ने लंगर में सेवा की जिससे कितने ही प्रेमियों को सहूलियत मिली, उन्होंने लंगर खाया। प्रेमियों ने टैंट वगैरहा की **सेवा** की, लोगों के ठहरने, नहाने और इधर-उधर जाने की सेवा की इससे कितने लोगों ने भजन-अभ्यास किया, फायदा उठाया। प्रेमियों ने सेवा की तभी लोग भजन कर सके और आराम कर सके।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब बंदा बंदे की मजदूरी नहीं रखता तो क्या भगवान हमारी मजदूरी रख सकता है? वह जरूर देता है वह बिना बोले ही हमारी सुनता है।''

गुरु तेगबहादुर के पास एक बहुत ही अमीर आदमी आया। आपका इसी तरह सतसंग का इंतजाम देखकर, प्रेमियों के रहने की जगह को देखकर कहने लगा, ''साधु-सन्तों को इस तरह की जगह बनाने की क्या जरूरत है, वे जब साधु ही हो गए तो उन्होंने ऐसी जगह से क्या लेना है?'' गुरु तेगबहादुर जी चुप रहे।

रात को 'शब्द-रूप' गुरु ने उस अमीर आदमी को नजारा दिखाया। बाहर बहुत तेज आंधी आई, जबरदस्त ओले पड़ रहे थे। उसे सिर छिपाने की कोई जगह नहीं मिली। वह शेर की गुफा में चला गया हांलाकि उसे पता था कि शेर की गुफा है लेकिन मौत से डरता हुआ इंसान क्या नहीं करता! अंदर शेर को देखकर डर से भयभीत होकर उसकी आँखे खुल गई और वह काँपने लगा।

सुबह आकर उसने गुरु तेगबहादुर जी से कहा, ''महाराज जी! मैं रात को सपने में समझ गया कि यह जगह आने-जाने वाले प्रेमियों के आराम के लिए है अगर मुझे शेर की गुफा न मिलती तो मैं उस तूफान से नहीं बच सकता था।''

प्यारेयो! सन्त उद्यम कर जाते हैं प्रेमी आकर फायदा उठा लेते हैं। सन्त प्रेमियों को प्रेरणा देकर सब कुछ करवाते हैं कि आने वाली संगत आराम करे उन्हें कुछ सुविधा मिले ताकि वे ज्यादा से ज्यादा भजन-अभ्यास कर सकें।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

युक्ति

हाँ भाई! पंजाबी की कहावत है कि किसी साहूकार ने बहुत लजीज खाने तैयार करवाए और मुनियादी करवा दी कि खाना मुफ्त है लेकिन जो एक बार परोसे हुए खाने को छोड़ेगा उसे हजार रूपये जुर्माना देना पड़ेगा। शर्त यह है कि चाहे कितने भी जवान आ जाएं लेकिन कोई बूढ़ा न आए। जब जवानों को पता लगा तो उन्होंने सोचा! इसमें कोई राज़ जरूर है जो वह जवानों को खाना खिला रहे हैं। हम अपने साथ किसी बूढ़े को लेकर चलते हैं; जवान एक बूढ़े को ट्रंक में बंद करके ले गए।

आगे जाकर देखा तो वहाँ तरह-तरह के लजीज खाने रखे हुए थे। उन्हें छोड़ने का मन भी नहीं करता था अगर बीच में छोड़ा तो जुर्माना भी लगेगा। एक जवान ने कहा कि हम बूढ़े से पूछते हैं। उन्होंने ट्रंक खोलकर बूढ़े से पूछा कि खाना खाने की **युक्ति** बताएं। बूढ़े ने कहा कि मैंने अंग्रेजों को खाना खाते हुए देखा है बस! तुम लोग बातें करते जाओ खाना जल्दी खत्म न होने दो सारा दिन खाते जाओ; उन्होंने इसी तरह किया।

आपको पता है कि बातें करते जाएं तो खाने का पता नहीं लगता। आखिर साहूकार ने सोचा कि इन नौजवानों को यह **युक्ति** कहाँ से आई जो ये सारा खाना खा गए है। जब तलाशी ली गई तो ट्रंक में से बूढ़ा निकला।

प्यारेयो! अब एक बूढ़ा डाक्टर मौलीना भी भजन बोलेगा।

जो मांगे ठाकुर अपने ते सोई सोई देवे
चतुर दिसा कीनो बल अपना, सिर ऊपर कर धारयो
कृपा कटाख अवलोकन कीनो, दास का दुःख विदारयो

***

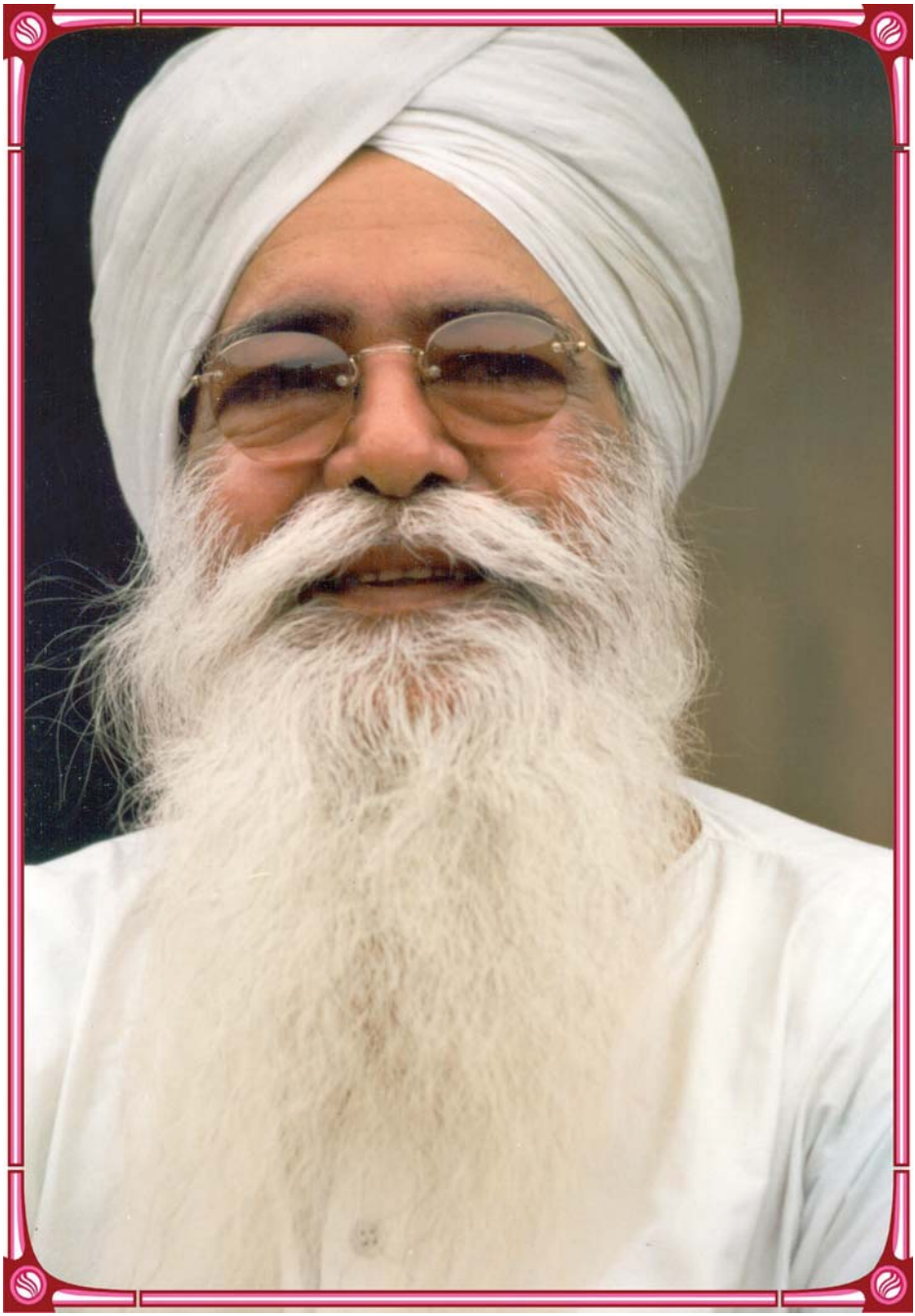

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सुरत

तुलसी साहब की बानी

सनबार्न्टन - अमेरिका

महान आत्माएं सच्चखंड से आती हैं वे चाहे अमीर घर में जन्म लें चाहे गरीब घर में जन्म लें उन पर गरीबी-अमीरी का असर नहीं होता। तुलसी साहब का ताल्लुक ऊना-सतारा की गद्दी के साथ था, आप ऊना-सतारा के बादशाह के लड़के थे।

तुलसी साहब को ऊना-सतारा की गद्दी मिलनी थी। आपके पिता ने सोचा! मैं राजपाट छोड़कर भजन-अभ्यास करूं और गद्दी तुलसी साहब को संभाली जाए क्योंकि आप ही बड़े लड़के थे। आपके पिता आपकी शादी करने की सोचने लगे तो आपने रातों-रात घर छोड़ दिया और हाथरस (उत्तर प्रदेश) में अपना सतसंग चलाया। स्वामी जी महाराज को तुलसी साहब से 'नामदान' मिला था। स्वामी जी महाराज पूर्ण सन्त हुए।

सन्त कुलमालिक होकर संसार में इंसानी जामा रखते हैं, वे हमेशा अपने असली रूप में समाए रहते हैं। परमात्मा ने उन्हें विरासत में नम्रता दी होती है। तुलसी साहब सारी जिंदगी बाल-ब्रह्मचारी रहे, आपने शादी नहीं करवाई।

मैं रोज आपको मुखतलिफ महात्माओं की बानी सुनाया करता हूँ। महात्माओं की बानियां सुनाने का भाव यही है कि सन्तों का मिशन किसी ग्रंथ या किताब के जरिए नहीं होता। सन्तों का मिशन परमात्मा की दया और परमात्मा की ताकत के साथ ही चलता है। मुखतलिफ महात्माओं की बानियां सुनाने का भाव यही होता है कि हम समाज बनाकर समाज की शरण लेकर परमात्मा को भूल

जाते है। महात्मा जिन ग्रन्थों को समझाते हैं हम उन ग्रन्थों को नहीं समझते और महात्माओं की शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं।

मैंने सुबह अभ्यास के समय बताया था कि सभी सन्त-महात्मा अपनी आत्मिक खोज में एक ही नतीजे पर पहुँचे हैं कि परमात्मा एक है, वह हर इंसान के अंदर है। हम परमात्मा से अंदर जाकर ही मिल सकते हैं लेकिन हम अपने आप अंदर नहीं जा सकते। हम महात्मा की दया से आँखों के ऊपरी भाग तीसरे तिल पर जाकर ही परमात्मा से मिल सकते हैं। तीसरे तिल के साथ हमारा खास संबंध हैं क्योंकि हमारा रूहानी सफर यहीं से शुरू होता है।

परमात्मा जिसे बख्शना चाहता है उसे किसी सन्त-महात्मा की सोहबत-संगत में लाता है। सन्त-महात्मा हमें अंदर जाने की युक्ति बताते हैं। जब हम भजन-अभ्यास करते हैं तो सन्त-महात्मा हमें नाम में मिलाकर अपने देश सच्चखंड ले जाते हैं। सन्त-महात्मा न किसी की पहले बनी समाज तोड़ते हैं न कोई नई समाज बनाने के लिए आते हैं। परमात्मा ने महात्मा को बहुत भारी जिम्मेवारी सौंपकर भेजा होता है कि जीवों को 'शब्द-नाम' का भेद बताएं; भूले बच्चों को मेरा भेद दें कि मैं उनके अंदर बैठा हूँ।

परथम बन्दौं सतगुरु स्वामी। तुलसी चरन सरनि रति मानी।।

आप कहते हैं, ''मैं सबसे पहले अपने सतगुरु को दंडवत वंदना करता हूँ जिन्होंने मुझे अंदर जाने की युक्ति और अपने घर जाने का भेद बताया।''

पुनि बन्दौं संतन सरनाई। जिन पुनि सुरत निरत दरसाई।।

अब आप कहते हैं, ''मैं गुरुओं की, सन्तों की वंदना करता हूँ जिन्होंने मुझे **सुरत** और निरत बख्शी है। सुरत सुनने वाली

शक्ति को और निरत देखने वाली शक्ति को कहते हैं। सन्तों की दया से मेरे अंदर ये दोनों ही शक्तियां जाग गई हैं।''

चरन सरन संतन बलिहारी। सूरति दीन्ही लखन सिहारी।।

आप कहते हैं, ''मैं सन्त-सतगुरु के चरणों में अपना सिर झुकाता हूँ। उन्होंने मेरी **सुरत** को अपने चरणों में लगाया, मेरी सुरत को सच्चखंड पहुँचाया।''

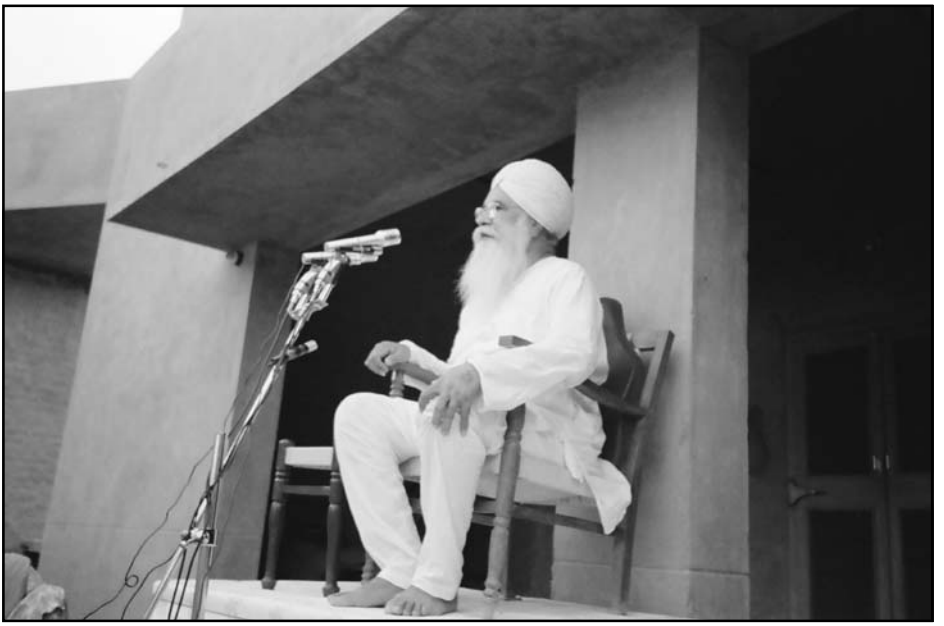

सरन सूर सूरति समझाई। सतगुरु मूर मरम लख पाई।।

आप कहते हैं, ''मैं क्यों सन्तों के चरणों में नमस्कार करता हूँ क्योंकि उन्होंने मुझे अंदर जाकर परमात्मा से मिलने का मार्ग बताया। उन्होंने सिर्फ मार्ग ही नहीं बताया बल्कि मेरे साथ चलकर मुझे धुरधाम भी पहुँचा दिया है।''

मैं मतिहीन दीन दिल दीन्हा। संत सरन सतगुरु को चीन्हा।।

आप कहते हैं, ''मैं मूर्ख, मुग्ध-गँवार और मतिहीन हूँ। मेरे अंदर अक्ल नहीं थी सन्तों के दिल में दया आई उन्होंने मुझे अपने चरणों में खींच लिया। सच्ची नम्रता, सच्ची आजजी सन्तों के अंदर ही है। वे कुलमालिक धुरधाम पहुँचकर भी अपने आपको मुग्ध-गँवार, मतिहीन कहते हैं।''

सतगुरु अगम सिंध सुखदाई। जिन सत राह रीति दरसाई।।

आप कहते हैं, ''सतगुरु सुखों का समुद्र है। मैं उनकी दया से ही सुखों के समुद्र में पहुँच गया हूँ।''

पुनि पुनि चरन कँवल सिर नाऊँ। दीन होई संतन गति गाऊँ।।

आप कहते हैं, ''मैं साँस-साँस के साथ सन्तों के चरणों में नमस्कार करता हूँ। मैं अति दीन होकर सन्तों के आगे खड़ा हूँ।''

दीन जानि दीन्ही मोहिं आँखी। मैं पुनि चरन सरन गहि भाखी।।

आप कहते हैं, ''मैं जब दीन बना तो उन्होंने मुझे वह आँख दी जिससे मैं उन्हें देख सका इसलिए मैं दीन होकर खड़ा हूँ।'' परम पिता कृपाल कहा करते थे, ''परमात्मा को दीनता प्यारी है आप अपने अंदर दीनता अख्तियार करें।''

मैं तौ चरन भाव चित चेरा। मोहिं अति अधम जानि कै हेरा।।

आप कहते हैं, ''मेरा मन सन्तों के चरणों का भँवरा बना बैठा है। मैं उनका गुलाम हूँ। उन्होंने मुझे गरीब समझकर अपने चरणों में जगह दी, अपने घर से नहीं निकाला।''

मैं बताया करता हूँ कि सन्त कुलमालिक-शहंशाह होते हैं, उन्होंने गरीबी धारण की होती है, उनके अंदर अहंकार नहीं होता। हमारे अंदर मैं-मेरी का पर्दा होता है।

मौहम्मद साहब ने अपने सब सेवकों को खड़ा करके पूछा, ''बताओ! तुम्हारे पास क्या-क्या सामान है?'' आपने हजरत उमर की तरफ इशारा किया तो उसने कहा कि मेरे बच्चे हैं, मेरी इतनी जायदाद है, मेरे इतने ऊँट है, मेरा इतना व्यापार चल रहा है। यह सब गिनती करने में उसने एक घंटा लगा दिया। जब हजरत अली की बारी आई तो उसने उठकर कहा, ''मेरे लिए सिर्फ आप हैं आपके बिना मेरा और कौन है?''

मैं तौ प्रति प्रति दास तुम्हारा। संत बिना कोई पावै न पारा।।

आप कहते हैं, ''सन्तों मैं तुम्हारा दास हूँ, तुम्हारा गुलाम हूँ। सन्तों की शरण के बिना परमात्मा से मिलने का और कौन सा रास्ता है?'' सन्तों के बिना परमात्मा नहीं मिलता। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

हम सन्तन की रैण प्यारे, हम सन्तन की शरणा।
सन्त हमारी ओट सताणी, सन्त हमारा गहना।
सन्तन स्यों मेरी लेवा देवी, सन्तन स्यों व्यवहारा।
सन्तन मोको पूंजी सौंपी, उतरया मन का धोखा।
धर्मराय अब क्या करें, ज्यो फाटयो सगला लेखा।।

संत दयाल कृपा सुखदाई। तुम्हरी सरन अधम तरि जाई।।

आप कहते हैं, ''सन्त दयालु होते हैं। सन्तों ने दया करके मुझे अपनी शरण में लिया। मैं अधम था, सन्तों की शरण में आकर तर गया हूँ।''

आदि न अंत संत बिन कोई। तुलसी तुच्छ सरन में सोई।।

तुलसी साहब कहते हैं, ''आदि में भी कोई सन्तों के बिना मालिक के दरबार में नहीं गया और न ही कोई अंत में जा सकता है अगर कोई परमात्मा के दरबार में गया तो सन्तों के जरिए ही गया है। परमात्मा ने सन्तों को यह मान बख्शा है कि आप पापी-पुन्नी जिसे भी लेकर आएं मैं उन्हें बख्श दूंगा।''

जो कछु करहिं करहिं सोइ संता। संत बिना नहिं पावै पंथा।।

सन्त परमात्मा के सेवादार होते हैं। सन्त इस मुल्क में परमात्मा के घर से वायसराय की तरह आते हैं। सन्तों के बिना रास्ता नहीं मिलता। पल्टू साहब कहते हैं:

राम के घर में काम सब सन्ते करते।
तैंतीस करोड़ देवता सन्त से सबही डरते।।

मैं जब 77 आर.बी. में था, उस समय जिन लोगों पर ऊपरी छाया होती थी या उन्हें कोई भटकी आत्मा तंग करती थी। हमारे इलाके के अंदर आने से पहले ही भटकी आत्मा चीखे मारने लगती और कहती कि मैंने आगे नहीं जाना। उसके बाद वे भटकी आत्माएं कुछ नहीं कहती थी। आज 16 पी.एस. में भी ऐसा ही है। पंजाब से ऐसे प्रेमी आ जाते हैं जिन्हें भटकी आत्माएं तंग करती हैं। वे भटकी आत्माएं हमारे इलाके में आकर कहती हैं कि हमने आपको यहीं लाना था। कहने का भाव कि सन्तों के सेवक के नजदीक यम नहीं आ सकता तो भटकी हुई आत्माएं कभी भी सन्तों के सेवक के नजदीक नहीं आ सकती, वे इनसे डरती हैं।

मोरे इष्ट संत सुरति सारा। सतगुरु संत परम पद पारा।।

अब आप कहते हैं, ''मेरा कोई इष्ट है तो वह सन्त ही है अगर कोई परमात्मा है तो सन्त ही है। उनकी महिमा बयान नहीं की जा सकती।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर, गुरु बिना मैं नाहीं होर।।

सतगुरु सत्तपुरुष अबिनासी। राह दीन लखि काटी फाँसी।।

आप कहते हैं, ''मेरा सतगुरु अविनाशी है उसका नाश नहीं होता। सतगुरु ने मुझे अपने घर का रास्ता दिया और धुरधाम पहुँचा दिया।''

जो लोग यह कहते हैं कि गुरु मर गया है। मैं हमेशा कहा करता हूँ, ''ऐसे लोगों को कोर्ट में खड़ा करके उनसे पूछें कि आपने जीने-मरने वाला गुरु क्यों धारण किया? जिनका गुरु जन्म-मरण में लगा हुआ है उनके सेवक कैसे तर जाएंगे? गुरु मरता नहीं वह अपने घर जाता है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सतगुरु मेरा सदा सदा न आवे न जाए।
ओह अविनाशी पुरुष है हर जह रहा समाए।।

कँवलकंज सतगुर पद बासी। सूरति कीन दीन निज दासी।।

आप कहते हैं, ''सतगुरु देह में बैठा है, अंदर कमल में भी उसका निवास है। हमारी देह में बारह कमल हैं, बारहवां कमल सच्चखंड है। सतगुरु का असली निवास अंदर के कमल में ही है।''

सूरत निरत आदि अपनाई। सतगुरु चरन सरन लौ लाई।।

आप कहते हैं, ''मेरी अंदर की **सुरत** जाग गई है, अंदर की निरत खुल गई है और मेरी लिव सन्तों के चरणों में लग गई है।

मैंने सन्तों के अंदर का नूरी स्वरूप देख लिया है; मैं उस पर भँवरे की तरह आशिक हो गया हूँ।'' जब तक हमारी अंदर की आँख नहीं खुलती तब तक हम गुरु को ऊपर-ऊपर से तो प्यार करते हैं लेकिन अंदर से प्यार नहीं करते।

बार बार सतगुरु बलिहारी। तुलसी अधम अघ नाहिं बिचारी।।

अब आप कहते हैं, ''मैं बार-बार सन्तों के चरणों पर कुर्बान जाता हूँ। मैं सपने में भी सन्तों को नहीं भूलता। सोते-जागते मेरी लौ हमेशा सन्तों के चरणों में लगी हुई है।''

बन्दौं सब चर अचर समाना। जानौ तुलसी दास निदाना।।
मैं किंकर पर दया बिचारा। अनहित प्रिये करौ हित सारा।।

आप कहते हैं, ''मैं तो कंकर था, पैरों की खाक के बराबर भी नहीं था। गुरु ने दया करके मुझे अपने चरणों में जगह दी। मुझे बख्शते हुए मेरे पाप नहीं देखे बस! अपना नाम बख्श दिया।'' गुरु नानक साहब जी अपने गुरु की तारीफ करते हुए कहते हैं:

गुण अवगुण मेरा कोई नहीं विचारया।
कंत पकड़ हौं कीन्ही रानी।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''मेरे पापों की तरफ नहीं देखा, मुझे अपनी सेज पर बिठा लिया।''

सब के चरन बन्दि सिर नाई। प्रिये लार लै प्रीति जनाई।।

आप कहते हैं, ''मैं सब सन्तों को नमस्कार करता हूँ और उन पर बलिहार जाता हूँ जो आकर इतना ऊँचा दान देते हैं और जीवों को निकालकर ले जाते हैं।''

तुम प्रति भूल बंद अस गाई। बार बार चरनन सिर नाई।।
पुनि बन्दौं सतगुरु सत भावा। जिनसे बस्तु अगोचर पावा।।

अब आप कहते हैं, ''मैं वंदना करता हूँ दंडवत करता हूँ सिर झुकाता हूँ क्योंकि सतगुरु ने मुझे वह अगोचर वस्तु दी है जिसे ये आँखे देख नहीं सकती, चोर चुरा नहीं सकता, आग जला नहीं सकती; पानी गला नहीं सकता।''

सतगुरु अगम अरूप अकाया। जिनकी गति मति संतन पाया।।

सतगुरु अगम है अरूप है काया रखता हुआ भी अकाया है। उनकी दया से मैं भी परमात्मा में समा गया हूँ।

सतगुरु की कस करहुँ बखानी। सूरति दीन्ही अगम निसानी।।

अब आप कहते हैं, ''मैं किस तरह सतगुरु की बड़ाई करूँ, किस तरह सतगुरु के गुणगान करूं? सतगुरु ने मेरी विषय-विकारों से लथपथ **सुरत** को सच्चखंड पहुँचा दिया।''

कबीर साहब भी कहते हैं, ''गूंगा गुड़ खा ले तो वह उसका स्वाद नहीं बता सकता क्योंकि उसकी जुबान काम नहीं करती।'' अगर हमसे कोई पूछे कि आपका सतगुरु कैसा है तो हम क्या बता सकते हैं? हम तो ज्यादा से ज्यादा उसे भगवान कह सकते हैं लेकिन इसमें भी उसकी बड़ाई नहीं क्योंकि भगवान ने तो गुरु को इससे भी ऊँची पदवी दी होती है।

लख लख अलख सुरति अलगानी। संतकृपा सतगुरु सहदानी।।

आप कहते हैं, ''जिसे हम अलख कहकर छोड़ देते थे उसे सन्तों की कृपा से लख लिया है। उसने दया करके हमारी **सुरत** को निर्मल और पवित्र कर दिया है।''

सूरति सैल पेल रस राती। सतगुरु कंज पदम मद माती।।

आप कहते हैं, ''मेरा सतगुरु ऊपर के कमलों में रहता है। मेरी **सुरत** भी जब चाहे शरीर में से उड़ारी मारकर वहाँ जा पहुँचती है, अंदर गुरु के साथ मिलाप कर लेती है।''

तुलसी तुच्छ कुच्छ नहिं जानै। सतगुरु चरन सरन रत मानै।।

अब तुलसी साहब कहते हैं, ''मैं तो एक तुच्छ जीव हूँ, मैं कुछ नहीं जानता मैं अंजान हूँ। मैं जो कुछ भी बयान कर रहा हूँ यह मैं अपने सतगुरु की कृपा से ही ब्यान कर रहा हूँ।''

सूरति सतगुरु दीन्ह जनाई। नित नित चढ़ै गगन पर धाई।।

आप कहते हैं, ''सतगुरु ने मेरे ऊपर बड़ी दया की है मेरी **सुरत** को जगा दिया है। मेरी सुरत नित ही गगन में ऊपर के मंडल में जाती है। अब इसकी मौज है जब चाहे चढ़े जब चाहे उतरे।''

सैल करै ब्रह्मांड निहारा। देखै आदि अंत पद सारा।।

अब आप कहते हैं, ''मेरी **सुरत** पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड की सैर करती है। आदि-अंत में मैं कहाँ से आई थी, क्या मैं वाक्य ही उस जगह आ गई हूँ?''

निरखा आदि अंत मधि माहीं। सोइ सोइ तुलसी भाखि सुनाई।।

तुलसी साहब कहते हैं, ''मेरी **सुरत** पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड में गई। आदि में भी देखा, मध्य में भी देखा। जो रास्ते थे वे भी मैंने आपको बता दिए हैं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

संतन की सुण साची साखी जो बोलण सो पेखण आखी।

पिंड माहिं ब्रह्मांड समाना। तुलसी देखा अगम ठिकाना।।
पिंड ब्रह्मांड में आदि अगाधा। पेली सुरति अलख लख साधा।।

आप कहते हैं, ''इस शरीर में उस परमात्मा को देखा। जो कुछ हम बाहर देखते हैं वह हमारे जिस्म के अंदर है।'' महात्मा पीपा जी भी कहते हैंः

जो ब्रह्मांडे सोई पिंडे जो खोजे सो पावे।

पिंड ब्रह्मांड अगम लख पाया। तुलसी निरखि अगाध सुनाया।।
पिंड माहिं ब्रह्मांड दिखाना। ता की तुलसी करी बखाना।।

आप कहते हैं, ''हमने पिंड को छोड़ा ब्रह्मांड पर चढ़े। जो कुछ रास्ते में देखा वह सतगुरु की कृपा से ही देखा; आपको वही सुनाया है।''

पिंड मांहि ब्रह्मांड, देखा निज घट जोइ कै।
गुरु पद पदम प्रकास, सत प्रयाग असनान करि।।

आप कहते हैं, ''जब हम पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड में जाते हैं आगे हमें प्रयाग राज मिलता है। हिन्दुओं में जहाँ गंगा, यमुना, सरस्वती तीनों नदियां इकट्ठी होती हैं उसे प्रयाग राज कहते हैं। हम वहाँ स्नान करने में बहुत बड़ा पुण्य समझते हैं लेकिन सन्तों-महात्माओं ने अंदर नदियां देखी बाहर उनका नाम रख दिया।''

लोगों ने बाहर नदियों में नहाने से मुक्ति समझ ली लेकिन सन्तों ने जो नदियां बताई थी वे हमारे अंदर हैं। जब हमारी रूह पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड में दसवें द्वार में जाती है वहाँ ईड़ा, पिंगला और सुखमना तीनों नाड़िया इकट्ठी होती हैं। तुलसी साहब उसे प्रयाग राज कहकर बयान करते हैं।

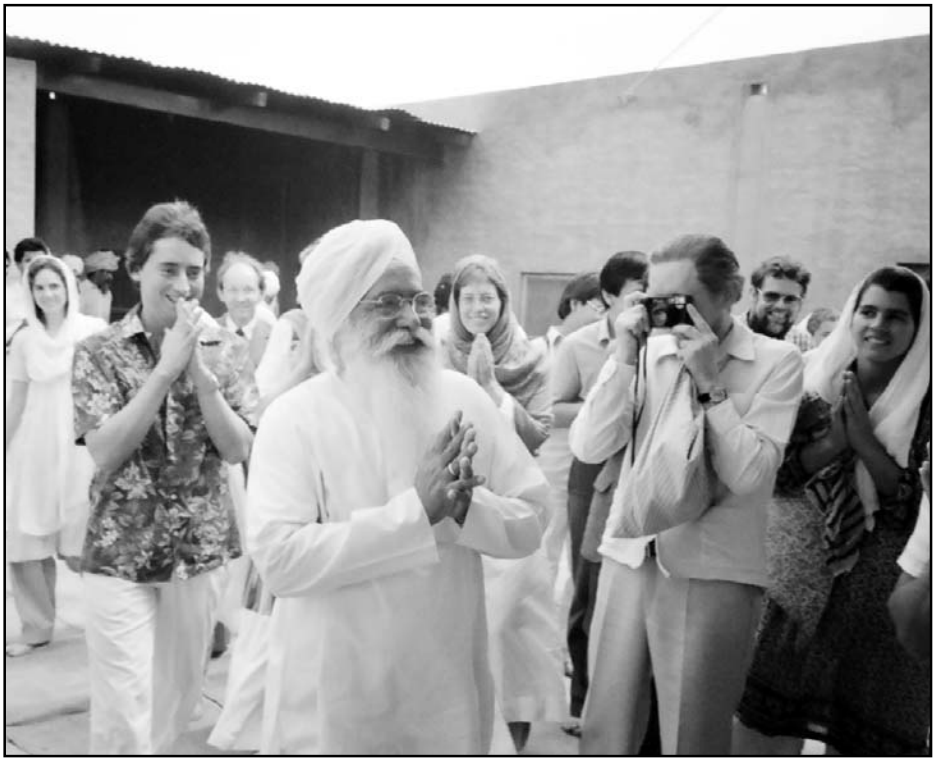

गुरु साहब ने दसवें द्वार को अमृतसर कहकर बयान किया है। महात्मा बेणीसर भी कहते हैंः

ईड़ा पिंगला और सुखमना, तीन वसे इक थाईं।
बेणी तेह प्रयाग मन मजन करे ते ताहीं।।

बूझै कोइ कोइ संत, आदि अंत जा ने लखी।
परचै परम प्रकासु जिन, अकास अम्बर चखी।।

तुलसी साहब कहते हैं, ''मैंने जो कुछ बयान किया है इसे वही सन्त समझेगा जिसने आदि-अंत सब कुछ देख लिया है, जो परमात्मा में समा गया है।''

DVD-515

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

अनमोल वचन

अक्सर जीव बाहर की सेवा कर सकते हैं लेकिन इससे सच्चे और झूठे की परख नहीं हो सकती। सच्चे की पहचान यह है कि सतगुरु ने उसे जो 'शब्द' बताया है उससे सुरत लग जाए तो उसकी प्रीत सच्ची समझनी चाहिए; सतगुरु से सच्चखंड के अलावा कोई चीज नहीं मांगनी चाहिए। सेवक हर वक्त यही अर्ज करता रहे कि हे सतगुरु! मुझे अपने चरणों में रखें। संसारी पदार्थों को भोगने वाले इंसान आखिर में चौरासी लाख योनियों में जाएंगे लेकिन जो जीव उन पदार्थों को सन्तों का प्रसाद समझकर भोगते हैं वे परमधाम के अधिकारी होंगे।

सन्तों और साधों की आशिकी पदार्थों में नहीं होती, वे हर वक्त सतगुरु के चरणों का स्वाद लेते रहते हैं। वक्त के सतगुरु से ऐसी प्रीत होनी चाहिए जैसे माता बच्चे को दूध पिला रही हो अगर कोई उसे छुड़ाए तो बच्चा कैसे व्याकुल होता है? जो लोग गुरु को छोड़कर चले जाते हैं उनकी प्रीत का क्या ठिकाना? यह उनकी बड़ी भारी गलती है क्योंकि गुरु जिसे 'नाम' देता है उसे नहीं छोड़ता।

अच्छे भाग्य वाले सतगुरु के चरणों में सतसंग करते हैं। चार-छह घंटे सिमरन में वक्त देते हैं अच्छी तरह नींद नहीं करते और पेट भरकर नहीं खाते लेकिन दुनियादार पेट भरकर खाते हैं और नींद करते है। जब तक श्वास है गुरु भक्ति करनी चाहिए, गुरु भक्ति कुलमालिक की भक्ति है।

गुरु से कुछ न मांगे, गुरु को अख्तियार है जब चाहेगा बख्श देगा। निन्दा सन्तों के सेवकों को पक्का और दुरूस्त करती है अगर

बदनामी और निन्दा न हो तो सेवक कच्चे ही रह जाते हैं। निन्दा और बदनामी सच्चे प्रेम की निशानी है। निन्दा प्रेम के बाजार की कोतवाल है, निन्दा काया की सफाई करती है।

सतगुरु के ज्ञान पर भरोसा रखें तो करामात, नूर और अंतरी मालिक के दर्शन होते हैं अगर सतसंगी अंदर मालिक के दर्शन नहीं करता तो उसके हृदय में कपट है। सच्चे और पूरे परमार्थी लोकलाज और डर को छोड़कर वहां पहुँचते हैं। सच्चा परमार्थी दुनियादारों का ख्याल न करके सतगुरु के दरबार में पहुँचता है। जब तक अंदर सतगुरु प्रकट न हो ठग्गी के परदे नहीं उतरते। कलयुग में सच्चा तीर्थ और व्रत साधु का संग है। 'नाम' सतगुरु का बड़ा पदार्थ है लेकिन बदनसीब 'नाम' की कद्र नहीं करते।

सिमरन पूरे गुरु से मिलता है, सिमरन के मुकाबले में करोड़ो तीर्थों की पूजा कुछ भी नहीं। यह दुनिया बेखबर और अंधी है। आम लोग कहते हैं कि सतगुरु से 'नाम' लेकर आया हूँ लेकिन अंदर की नौं ताकतों ने इसे फिर अभागी बना दिया, नाम की तरफ नहीं आने दिया। हमें समझना चाहिए कि बीमारी किस तरह जाए! नौं इन्द्रियों का गुलाम बनकर सारी उम्र गुजार दी। सिमरन करें तो पता चले कि मेरा सतगुरु क्या चीज है? मैं देह धारकर आया हूँ मैं क्या चीज हूँ? गुरु देह नहीं 'शब्द' है, नूर है, प्रकाश है।

भक्ति मार्ग कठिन है। गुरु का द्वार हर किसी को नसीब नहीं होता। जिस पर मालिक कृपा करता है उसी का चित्त हरि की भक्ति में लगता है। सुर-नर, ऋषि-मुनि हरि की भक्ति को लोचते हैं। देवी-देवता फिरते हैं, त्रिलोकी में भी सच्ची भक्ति नहीं। सच्ची भक्ति चौथे पद पूरे सतगुरु के बिना और किसी के पास नहीं। यह दौलत केवल गुरु की सेवा से ही प्राप्त हो सकती है।

गुरुमुख की भक्ति इस तरह है कि आँखें बंद की भक्ति के बीच चला गया, आँखें खोली तो नीचे आ गया। घट में सिमरन या भक्ति होती है। अपने अंदर मालिक का प्यार पैदा करें। अंदरूनी मालिक के साथ प्यार जोड़ने का नाम ही भक्ति है। अंदर दिन-रात भक्ति हो रही है सिर्फ अंदर तवज्जो देकर आनन्द लें आपको कुछ करने की जरूरत नहीं।

रख निगाह विच नक्शा कृपाल दिलबर वाला।
जे दिलबर बेपरवाह है तो सावन नहीं सुखाला।
माल सबाव जहाना दा गम हाविज कब तक।
न कर ऐसी चिन्ता ओढ़क छड् छड् चल जासी।
ऐन इश्क हकीकी जिन्हा पाया मुहों न कुज अलावण हू।
दमदम दे विच आखण मौला दिल नूं कैद लगावण हू।

जब तक मन तेरा साथी है तब तक तेरा पर्दा नहीं खुलेगा। पर्दा खुले बिना काज पूरा नहीं होगा। नाम का जपना ही मुश्किल है, मन के साथ हर कोई मुकाबला नहीं कर सकता।

सारे जगत को 'शब्द' ने पकड़कर रखा हुआ है। वह शब्द कौन सा है जो इस जेल से छुड़ाकर ले जाए? वह शब्द नौं द्वार छोड़कर दसवें द्वार में रहता है। यह 'शब्द' पूरे मुर्शिद के बिना नहीं मिलता; अच्छे भाग्य वालों को पूरा सतगुरु मिलता है।

एक बार सेवादारों ने सच्चे पातशाह महाराज सावन सिंह जी से अर्ज की, ''हमें बिना भजन किए ही बख्श दें।'' सच्चे पातशाह ने फरमाया, ''यह बात झूठ है, भजन तो करना पड़ेगा। सतगुरु के वचन को मन में रखें। तन, मन, धन और सुरत-निरत को गुरु के आगे रख दें। गुरु की आज्ञा में रहें। जो वचन गुरु कहता है उसे चित्त में रखें, चाहे घास खोदने का वचन करे वही परमपद है।''

***

धन्य अजायब

16 पी.एस. आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

24, 25 व 26 अक्टूबर 2014

28, 29 व 30 नवम्बर 2014

26, 27 व 28 दिसम्बर 2014

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रमः

7,8,9,10 व 11 जनवरी 2015